e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 4, April 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

पर्यावरण संरक्षण के लिए सामाजिक और साहित्यिक दृष्टिकोण

डॉ संगीता शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दयानंद कॉलेज, हिसार।

Mail ID : SANGEETAKASHYAP69@GMAIL.COM

ऋग्वेद से लेकर बृहदारण्यकोपनिषद्, पद्मपुराण और मनुस्मृति सहित अन्य वाङ्मयों पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ मिलते हैं. छान्दोग्यउपनिषद् में उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्ष जीवात्मा से ओतप्रोत होते हैं और मनुष्यों की भाँति सुख-दु:ख की अनुभूति करते हैं.

हिन्दू दर्शन में एक वृक्ष की मनुष्य के दस पुत्रों से तुलना की गई है-

'दशकूप समावापी: दशवापी समोहृद:।

दशहृद सम:पुत्रो दशपत्र समोद्रुम:।।

घर में तुलसी का पौधा लगाने का आग्रह हिन्दू संस्कृति में क्यों है? यह आज सिद्ध हो गया है. तुलसी का पौधा मनुष्य को सबसे अधिक प्राण वायु

ऑक्सीजन देता है. तुलसी के पौधे में अनेक औषधिय गुण भी मौजूद हैं. पीपल को देवता मानकर भी उसकी पूजा नियमित इसीलिए की जाती है क्योंकि वह भी अधिक मात्रा में ऑक्सीजन देता है. सामान्य गृहिणी भी अपने अबोध बच्चे को समझाती है कि रात में पेड़-पौधे को छूना नहीं चाहिए, वे सो जाते हैं, उन्हें परेशान करना ठीक बात नहीं. वह गृहिणी परम्परावश ऐसा करती है. उसे इसका वैज्ञानिक कारण नहीं मालूम. रात में पेड़ कार्बन डाइ ऑक्सीजन छोड़ते हैं, इसलिए गांव में दिनभर पेड़ की छांव में बिता देने वाले बच्चे-युवा-बुजुर्ग रात में पेड़ों के नीचे सोते नहीं हैं. भगवान शिव तो बिल्व-पत्र और धतूरे से ही प्रसन्न होते हैं. यदि कोई शिवभक्त है तो उसे बिल्वपत्र और धतूरे के पेड़-पौधों की रक्षा करनी ही पड़ेगी. वट पूर्णिमा और आंवला ग्यारस का पर्व मनाना है तो वटवृक्ष और आंवले के पेड़ धरती पर बचाने ही होंगे.सरस्वती को पीले फूल पसंद हैं. धन-सम्पदा की देवी लक्ष्मी को कमल और गुलाब के फूल से प्रसन्न किया जा सकता है. गणेश दूर्वा से प्रसन्न हो जाते हैं. हिन्दू धर्म के प्रत्येक देवी-देवता भी पशु-पक्षी और पेड़-पौधों से लेकर प्रकृति के विभिन्न अवयवों के संरक्षण का संदेश देते हैं.

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

जलस्रातों का भी हिन्दू धर्म में बहुत महत्व है. ज्यादातर गांव-नगर नदी के किनारे पर बसे हैं। ऐसे गांव जो नदी किनारे नहीं हैं, वहां ग्रामीणों ने तालाब बनाए थे. बिना नदी या ताल के गांव-नगर के अस्तित्व की कल्पना नहीं है. हिन्दुओं के चार वेदों में से एक अथर्ववेद में बताया गया है कि आवास के समीप शुद्ध जलयुक्त जलाशय होना चाहिए. जल दीर्घायु प्रदायक, कल्याणकारक, सुखमय और प्राणरक्षक होता है. शुद्ध जल के बिना जीवन संभव नहीं है.

यही कारण है कि जलस्रोतों को बचाए रखने के लिए हमारे ऋषियों ने इन्हें सम्मान दिया. पूर्वजों ने कल-कल प्रवाहमान सरिता गंगा को ही नहीं वरन सभी जीवनदायनी नदियों को मां कहा है. हिन्दू धर्म में अनेक अवसर पर नदियों, तालाबों और सागरों की मां के रूप में उपासना की जाती है. छान्दोग्योपनिषद् में अन्न की अपेक्षा जल को उत्कृष्ट कहा गया है. महर्षि नारद ने भी कहा है कि पृथ्वी भी मूर्तिमान जल है. अन्तरिक्ष, पर्वत, पशु-पक्षी, देव-मनुष्य, वनस्पति सभी मूर्तिमान जल ही हैं. जल ही ब्रह्मा है. महान ज्ञानी ऋषियों ने धार्मिक परंपराओं से जोड़कर पर्वतों की भी महत्ता स्थापित की है.

देश के प्रमुख पर्वत देवताओं के निवास स्थान हैं. अगर पर्वत देवताओं के वासस्थान नहीं होते तो कब के खनन माफिया उन्हें उखाड़ चुके होते. विन्ध्यगिरि महाशक्तियों का वासस्थल है, कैलाश महाशिव की तपोभूमि है. हिमालय को तो भारत का किरीट कहा गया है. महाकवि कालिदास ने 'कुमारसम्भवम्' में हिमालय की महानता और देवत्व को बताते हुए कहा है- 'अस्तुस्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:.' भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन की पूजा का विधान इसलिए शुरू कराया था क्योंकि गोवर्धन पर्वत पर अनेक औषधि के पेड़-पौधे थे, मथुरा के गोपालकों के गोधन के भोजन-पानी का इंतजाम उसी पर्वत पर था. मथुरा-वृन्दावन सहित पूरे देश में दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा धूमधाम से की जाती है.

हमारे महर्षियों ने जीव-जन्तुओं के महत्व को पहचानकर उनकी भी देवरूप में अर्चना की है. मनुष्य और पशु परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं. हिन्दू धर्म में गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, हाथी, शेर और यहां तक की विषधर नागराज को भी पूजनीय बताया है. प्रत्येक हिन्दू परिवार में पहली रोटी गाय के लिए और आखिरी रोटी कुत्ते के लिए निकाली जाती है. चींटियों को भी बहुत से हिन्दू आटा डालते हैं. चिडिय़ों और कौओं के लिए घर की मुंडेर पर दाना-पानी रखा जाता है. पितृपक्ष में तो काक को बाकायदा निमंत्रित करके दाना-पानी खिलाया जाता है. इन सब परम्पराओं के पीछे जीव संरक्षण का संदेश है. हिन्दू गाय को मां कहता है. उसकी अर्चना करता है. नागपंचमी के दिन नागदेव की पूजा की जाती है. नाग-विष से मनुष्य के लिए प्राणरक्षक औषधियों का निर्माण होता है. नाग पूजन के पीछे का रहस्य ही यह है. हिन्दू धर्म का वैशिष्ट्य है कि वह प्रकृति के संरक्षण की परम्परा का जन्मदाता है. हिन्दू संस्कृति में प्रत्येक जीव के कल्याण का भाव है. हिन्दू धर्म के जितने भी त्योहार हैं, वे सब प्रकृति के अनुरूप हैं. मकर संक्रान्ति, वसंत पंचमी,

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

महाशिव रात्रि, होली, नवरात्र, गुड़ी पड़वा, वट पूर्णिमा, ओणम्, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, छठ पूजा, शरद पूर्णिमा, अन्नकूट, देव प्रबोधिनी एकादशी, हरियाली तीज, गंगा दशहरा आदि सब पर्वों में प्रकृति संरक्षण का पुण्य स्मरण है.

दुनिया के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि की स्तुति में रचा गया है. **ओम् अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।।**

हिन्दू धर्म का प्रकृति के साथ कितना गहरा रिश्ता है, इसे इस बात से ही समझा जा सकता है ।

प्रकृति मानव तन और मन दोनों में निवास करती है। बिना प्रकृति के सुख में जीवन एक कल्पना भी नहीं की जा सकती । तुलसीदास ने रामचरितमानस के किष्किंधा कांड में लिखा है -

'क्षिति जल पावक गगन समीरा

पंच रचित अति अधम सरीरा ।'

भारतीय संस्कृति को अरण्य संस्कृति कहा जाता है क्योंकि भारतीय संस्कृति में वन और वनस्पति का अत्यधिक महत्व है। किंतु भौतिकतावादी दृष्टिकोण और स्वार्थ परता के चलते मनुष्य ने जहां भी कदम रखा वहां से हरियाली को खत्म कर दिया प्रकृति के प्रति मनुष्य का उपेक्षा का भाव और संग्रह की प्रवृत्ति के कारण प्रकृति और पर्यावरण भयावह स्थिति से गुजर रहा है मनुष्य ने पर्यावरण की तीन प्रमुख प्रकोष्ठ हो जलवायु और स्थल के प्रदूषण से वायु प्रदूषण जल प्रदूषण तथा जल प्रदूषण फैला दिया जिससे जीवन और जगत को भारी नुकसान पहुंच रहा है। वायवीय पर्यावरण में जहां मानकीकृत वैज्ञानिक उपलब्धियां नाभिकीय विस्फोटों से उत्पन्न विकार पैदा हो रहे हैं तो औद्योगिक संस्थानों परमाणु रिएक्टरों तथा पनबिजली घरों की चिमनियों के उठते हुए धुएँ से स्वच्छ वातावरण प्रदूषित हो रहा है। इसी तरह औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला प्रदूषित जल नदी नालों को गंदा कर रहा है। यहां हम सभी प्रकार के प्रदूषण से मुक्ति के लिए प्रदूषण निवारक उपाय तो अपना रहे हैं लेकिन बढ़ती जनसंख्या के कारण यह सारे उपाय निरर्थक होते जा रहे हैं। पेड़ों की कटाई से दुखी नरेश अग्रवाल कहते हैं कि

मैं गुज़र रहा था, अपने चिरपरिचित मैदान से

एकाएक चीख सुनी, जो मेरे प्रिय पेड़ की थी

कुछ लोग खडे थे,बडी-बडी कुल्हाडियाँ लिए

वे काट चुके थे इसके हाथ, अब पाँव भी काटने वाले थे

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

हम लोग लाश उठा रहे है।

अंतिम संस्कार भी करा देगें

तुम राख ले जाना।"

किंतु प्रकृति मनुष्य के सामने असहाय और विवश है फिर भी स्वयं पर भी अत्याचार का प्रकृति सदैव विरोध करते हैं।जय शंकर प्रसाद ने अपने महाकाव्य कामायनी मे लिखा है-

"प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित हम सब भूले थे मद में

भोले थे, हाँ तिरते केवल सब विलासिता के मद में।

वे सब डूबे डूबे उनका वैभव बन गया पारावार,

उमड रहा था देव सुखों पर दुःख जलधि का नाद अपार।"

समूची सृष्टि पंचमहाभूत अर्थात् अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु और आकाश से बनी है। यही पांच तत्व मिलकर समूचे विश्व ब्रह्मांड के जड़, चेतन और जीवों का निर्माण और पोषण करते हैं। यदि यह जीवनदायी तत्त्वों की शुद्ध और संरक्षित रहें तो जीवन भी शुद्ध और सुरक्षित रहता है। इन पांच तत्त्वों का सम्मिलित स्वरूप ही पर्यावरण है। पर्यावरण का संतुलन ही जीवनचक्र को नियंत्रित करता है और इसमें गतिरोध आते ही जीवन संकट में पड़ जाता है। यही कारण है कि इसकी सुरक्षा की चिंता प्राचीन काल से होती आ रही है। वेद कालीन महर्षियों ने इसकी आवश्यकता एवं महत्ता को ध्यान में रखकर इसे शुद्ध एवं संरक्षित रखने हेतु नियम बना लिए थे। वेदों को सृष्टि विज्ञान का मुख्य ग्रंथ माना गया है। इनमें सृष्टि के जीवनदायी तत्वों की विशेषताओं का काफी सूक्ष्म व विस्तृत विवरण है। ऋग्वेद में अग्नि के रूप, रूपांतर और उसके गुणों की व्याख्या की गई है। यजुर्वेद में वायु के गुणों, कार्य और उसके विभिन्न रूपों का आख्यान मिलता है। अथर्ववेद में पृथ्वी तत्व का वर्णन हुआ है। वैदिक महर्षियों ने इन प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना। इसीलिए उन दिनों जड़-चेतन , सभी रूपों की उपासना व अभ्यर्थना की जाती थी और इसीलिए वैदिक युग में समस्त सृष्टि में सुख-शांति व समृद्धि का वातावरण था।

यजुर्वेद का अध्ययन इस तथ्य का संकेत करता है कि उसके शांति पाठ में पर्यावरण के सभी तत्त्वों को शांत और संतुलित बनाए रखने का उत्कट भाव है, वहीं इसका तात्पर्य है कि समूचे विश्व का पर्यावरण संतुलित और परिष्कृत हो। इसमें उल्लेख है कि द्युलोक से लेकर पृथ्वी के सभी जैविक -अजैविक घटक संतुलन की अवस्था में रहें। अदृश्य

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

आकाश पृथ्वी एवं उसके सभी घटक, जल, औषधियां, वनस्पतियां व संपूर्ण संसाधन एवं ज्ञान शांत रहें। पर्यावरण के प्रति इतना गहन एवं सूक्ष्म ज्ञान का दिग्दर्शन अन्यत्र दुर्लभ है।

ऋग्वेद में वायु के औषधीय महत्त्व को स्वीकारा गया है। ऋग्वेद की ऋचा कहती है-हे वायु! अपनी औषधि ले आओ और यहां से सब दोष दूर करो, क्योंकि तुम ही सभी औषधियों से भरपूर हो। ऋग्वेद का एक अन्य मंत्र जल की शुद्धता का वर्णन करते हुए कहता है, आओ सभी मिल कर प्रवाहित जल के प्रशंसा के गीत गाएं जो हजारों धाराओं से स्फटिक की तरह बहकर आंखों को आनंद देता है। उपनिषद कारों ने ऊर्जा के अपरिमित स्रोत सूर्य को जगत् की आत्मा कहकर उसकी अभ्यर्थना की है, सूर्य को प्राण की संज्ञा दी है। यज्ञों के माध्यम से वायुमंडल को शुद्ध करना भी वेदों का विषय रहा है। वैदिककाल में पर्यावरण के परिष्कार के लिए यज्ञ-हवन संपन्न किए जाते थे।

सामवेद में जीवन की मंगलकामना और प्रकृति की अविरल उपासना के भाव वर्णित हैं। इसमें वनस्पतियों और पशुजगत तथा औषधि विज्ञान के सुंदर मंत्रों के उद्धरण हैं। सामवेद कहता है – हे इंद्र, सूर्य रश्मियों और वायु से हमारे लिए औषधि की उत्पत्ति करो। हे सोम, आपने ही औषधियों, जलों और पशुओं को उत्पन्न किया है। अथर्ववेद में भी पर्यावरण संरक्षण और संवद्र्धन संबंधी चिंतन का गौरवगान हुआ है। पृथ्वी सूक्त में अथर्वण ऋषि धरा की महानता, उदारता, सर्वव्यापकता आदि अनंत गुणों पर विस्मित हो कह उठते हैं, हे माता! आपके लिए ईश्वर ने शीत, वर्षा तथा वसंत ऋतुएं बनाई हैं। दिन-रात के चक्र स्थापित किए हैं। इस कृपा के लिए हम ईश्वर के आभारी हैं। वे खनन से पूर्व धरती माता से प्रार्थना करते हैं कि हे मां, जीविकोपार्जन के लिए हम ऐसा करने को बाध्य हैं, किन्तु हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह तुम्हें पुन: हरा-भरा कर दे। हम भूमि के जिस स्थान पर खनन करें, वहां शीघ्र ही हरियाली छा जाए। आपसे प्रार्थना है कि ऐसी सद्बुद्धि दें जिससे हम आपके हृदय स्थल को न तो आहत करें, और न ही आपको दु:ख पहुंचाएं। व्यक्ति स्वस्थ, सुखी दीर्घायु रहे, नीति पर चले और पशु वनस्पति एवं जगत् के साथ साहचर्य रखे, यही वैदिक साहित्य की विशेषता है।

वाल्मीकि रामायण में राम के वन गमन के समय प्रकृति के मनोरम दृश्य का उल्लेख किया गया है-इस समय पर्वत प्रदेश, घने -जंगल एवं रम्य नदियों के किनारे सारस और चक्रवाक पक्षी आनंद में विचर रहे थे। सुंदर जलाशय में कमल दल खिले हुए थे। जंगलों में झुंड के झुंड हिरन, गैंडे, वाराह और हाथी निर्भय घूम रहे थे अर्थात् उन दिनों पर्यावरण अत्यंत समृद्ध था। इस काल का चित्रण करने वाले महाकवि भवभूति ने भी प्रकृति का अत्यंत हृदयग्राही चित्रण करते हुए लिखा है कि वनों में सिद्ध तपस्वियों के आश्रम हरियाली से भरापूर थे। वहां स्वच्छंद विचरण करते हिरण शावक इन प्राकृतिक आवासों की शोभा बहुगुणित कर देते थे। रामायण कालीन ग्रंथों में प्रकृति को सजीव व निर्जीव दोनों ही तत्वों से चेतना संपन्न बताया गया है। रामचरितमानस के उत्तरकांड में वर्णन मिलता है कि चरागाह तालाब, हरित भूमि, वन उपवन के सभी जीव आनंद पूर्वक रहते थे।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

इसी तरह महाभारत कालीन मनीषियों ने भी पर्यावरण की गौरव गरिमा को महिमा मंडित किया है। इस काल में भगवान् कृष्ण द्वारा गाई गीता में प्रकृति को सृष्टि का उपादान कारण बताया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं , प्रकृति के कण -कण में सृष्टि का रचयिता समाया हुआ है। प्रकृति के समस्त चमत्कारों को परमेश्वर का स्वरूप बताते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं ही पृथ्वी में प्रवेश करके सभी भूत-प्राणियों को धारण करता हूँ। चंद्रमा बनकर औषधियों का पोषण करता हूं। महाभारतकाल में प्रत्येक तत्व को देवता सदृश स्वीकार कर उनकी अभ्यर्थना की जाती थी। उन दिनों वृक्षों की पूजा का प्रचलन था। वृक्षों को काटना महापाप समझा जाता था। महाभारत के आदिपर्व में वर्णन है कि गाँव में जो जगह पेड़ फूल और फलों से भरपूर हो वह स्थान हर तरह से अर्चनीय है। इसमें प्रकृति का अनेक उपमाओं से अलंकृत किया गया है। पवित्र और शीतल जलाशय तथा जंगल पहाड़ व पर्वतों आदि को प्रकृति व पर्यावरण के अद्भुत प्रसंगों से महाभारत के सभी पर्व भरे पड़े है। महाकवि कालिदास ने भी अपने नाटकों एवं काव्यों में पशु -पक्षी वृक्षादि से मानवीय जीवन का अपूर्व संबंध स्थापित किया है। अभिज्ञान शाकुंतलम् ने तो इन रिश्तों व संबंधों को सजीव कर दिया है। कण्व आश्रम में पली बढ़ी शकुंतला अपने चारों ओर के परिवेश एवं वातावरण से इतना एकात्म एवं तदाकार हो गई थी कि उसका विछोह सभी को विह्वल कर रहा था। उसकी विदाई के समय पशु पक्षी ही नहीं वनस्पति जगत् भी उदास हो गया।

आधुनिक युग में जबकि चारों ओर विषैले और प्रदूषित वातावरण में सांस लेना कठिन है- अग्निहोत्र की महत्ता एवं आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। भारतीय संस्कृति में वातावरण की शुद्धि के हम व्योम लिए अग्निहोत्र को अनिवार्य मानते हुए कहा गया है कि जहां सब स्त्री पुरुष एक मन रह कर पुण्यात्मा पुरुषार्थी होकर अग्निहोत्र करते हैं, कुकृतामग्निहोत्रहुतां अर्थात् वेद मंत्रों से अग्नि में मिष्ट सुगंध द्रव्य चढ़ा कर वायु शुद्धि करते हैं और अग्निविद्या द्वारा अग्निनौका, अग्नियान, ऋषियों विमान आदि रचते हैं, वहां सुमति के निवास से सब जन आनन्द भोगते हैं। अग्निहोत्र शुद्ध घी एवं सुगन्धित, वायुशोधक, रोगनिवारक पदार्थों की आहुति द्वारा संपन्न किया जाता है। अग्निहोत्र वह है जिसमें अग्नि में वायुशोधक या रोगकृमिनाशक पदार्थों का होम किया जाता है। यह मंत्रपाठ पूर्वक भी हो सकता है और चिकित्सा शास्त्रीय दृष्टि में भी दोनों ही स्थितियों में मानव के लिए हितकारक है। आयुर्वेद के चरक, बृहन्निघण्टुरत्नाकर, योगरत्नाकर आदि ग्रन्थों में ऐसे कई योग वर्णित हैं, जिनकी आहुति अग्नि में देने से वायुमंडल शुद्ध होता है तथा श्वास द्वारा धूनी अंदर वृक्षों लेने से रोग दूर होते हैं। वेदों में अनेक स्थानों पर अग्नि को पावक, रोग विनाशक, पावकशोचिष आदि विशेषणों से उसकी शोधक शक्ति का उल्लेख किया गया है। यज्ञ का फल चतुर्दिक फैलता है- यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा (यजु. 8.62) । अग्निहोत्र औषधि का कार्य सम्पन्न करता है- अग्निष्कृणोतु भेषजम् (अथर्व. 6.106.3) अग्निहोत्र से शरीर की कमजोरी दूर होती हैं- अग्ने यन्मे तन्वा ऊन तन्म आपूण (यजु. 3.17) अग्नि वायुमण्डल से समस्त दूषक तत्वों का उन्मूलन करती है- अग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि (ऋ. 10.80.2) वेद मनुष्यों को प्रेरित करते हैं कि तुम अग्नि में शोधक द्रव्यों की आहुति देकर वायुमंडल को शुद्ध करो- आ जुहोता

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

हविषा मर्जयध्वम् (साम 63) अग्निहोत्र का उचित समय सायं और प्रातः बताया गया। इसका कारण यह है कि सायं किए गए अग्निहोत्र वायुमण्डल को प्रातःकाल तक शुद्ध रखते हैं और प्रातः किए गए अग्निहोत्र से वायुमण्डल सायंकाल तक शुद्ध रहता है। अग्निहोत्र ऐसी विशाल, दिव्य, दीप्तिमयी, निश्चल, कल्याणदायिनी, अखण्डित, निश्चित रूप से आगे ले जाने वाली, विधिविधान रूपी सुन्दर चप्पुओं वाली, निर्दोष, न चूने वाली नौका है जो सदा यजमान की रक्षा करती है (यजुर्वेद 21.6)। अग्निहोत्र करने से आयु बढ़ती है, प्राण सबल होता है, नेत्र ज्योति सशक्त होती है, श्रोत्र और वाणी शक्तिवान होते हैं, मन और आत्मा सुदृढ़ और सबल होते हैं (यजुर्वेद 18.29)। वेदों में वायु, जल आदि की शुद्धि के लिए अग्नि में गोघृत एवं गूगल, पिप्पली, अजशृंगी आदि औषधियों की आहुति की चर्चा मिलती है। गूगल के संबंध में अथर्ववेद में लिखा है कि जिसे गूगल औषध की सुगन्ध प्राप्त होती है उसे रोग पीड़ित नहीं करते अग्निहोत्र की अग्नि में डाली हुई घृत, गूगल आदि की हवि प्रदूषित वायुमंडल के प्रदूषण को दूर करके उसे स्वच्छ, सुगन्धित रोगहर वायु में परिणत कर देती है। गोघृत में प्रदूषण को दूर क्षमता है (अर्थवेद 19.38.1)।

अग्निहोत्र वायु, जल, मिट्टी, वनस्पति आदि सभी के प्रदूषण को दूर करने में सहायक होता है। वायु अग्निहोत्र की हवि की सुगन्ध को चतुर्दिक् फैलाती है। सूर्य – रश्मियों के साथ मिलकर वायु अग्नि में आहुत हवियों को और भी अधिक लोकोपयोगी बना देती है- तवायं भाग ऋत्वियः सरश्मि सूर्ये सचा। यदि वायु प्रदूषित भी है तो भी हविर्गन्ध से युक्त होकर वह शुचि हो जाता है। वायु अग्निहोत्र से शुद्ध होकर हमारे प्राण, अपान एवं व्यान की रक्षा करता है। दिन रात जो विभिन्न प्रकार का प्रदूषण उत्पन्न होता रहता है अग्निहोत्र से उसे परिशुद्धता मिलती है (यजु 20.15)।

उपसंहार

आज पर्यावरण संकट भयावह होता जा रहा है। आज स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि जीवन के लिए अनिवार्य जल, थल, वायु तीनों प्रदूषण से ग्रस्त हैं। उसके अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण और रेडियो एक्टिव प्रदूषण का खतरा भी सिर पर मंडराने लगा है। पृथ्वी की सतह पर 43 प्रतिशत क्षेत्र सूखे, बंजर व रेगिस्तान के रूप में विद्यमान है, उसमें से 67 प्रतिशत क्षेत्र मानव निर्मित है अर्थात् मनुष्य अपनी कब्र शनैः-शनैः स्वयं ही खोदता जा रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 51 प्रतिशत प्रदूषण उद्योगों से, 27 प्रतिशत प्रदूषण वाहनों से 8 प्रतिशत फसल जलाने से, तथा 14 प्रतिशत घरेलू व अन्य कारणों से होता है। वस्तुतः कृषि में प्रयुक्त कीटनाशक दवाएं, कारखानों से निकलने वाले अवशेष और अस्पतालों से निकली गंदगी से नदियों का जल तो प्रदूषित होता ही जा रहा है, इसके अतिरिक्त गली-मौहल्लों में लगी छोटी-बड़ी फैक्ट्रियों, तरह-तरह के जेनरेटर, वाहन, वायु प्रदूषण साथ-साथ ध्वनि प्रदूषण भी फैलाते जा रहे हैं।साहित्य एवं समाज में यत्र-तत्र सृष्टि संरचना को समझाने का प्रयत्न किया गया है, सृष्टि के नैसर्गिक सौन्दर्य को बारंबार वर्णित किया है। साहित्य एवं समाज का अनुशीलन करते समय हमें लगता है कि हमारे प्राचीन ग्रंथ एवं समाज के लोग निरंतर हमें पर्यावरण के प्रति सतर्क एवं सावधान करते हैं। धार्मिक ग्रंथों एवं वैदिक संहिताओं में जहां

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 4, April 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1204156 |

एक ओर वृक्ष तथा वनस्पतियों के संरक्षण और उनकी पूजा की बात कहकर वर्षा के महत्व को समझाया गया है वहां दूसरी ओर विपरीत आचरण करने वालों को सही मार्ग पर चलने के लिए सावधान किया गया है। पर्यावरण के तीनों मंडल प्राणी जगत के जीवन के लिए उपयोगी हैं। वह जलमंडल से जल, स्थलमंडल से भोजन तथा वायुमंडल से प्राण वायु प्राप्त करता है। तीनों मंडल एक-दूसरे के पूरक हैं, इनमें से एक के भी नष्ट होने पर जीव का अस्तित्व संभव नहीं है। इन तीनों मंडलों से प्राप्त ऊर्जा का अनुपातत: प्रयोग करके हम पर्यावरण को संरक्षित कर सकते है इनकी ऊर्जा का अनुपात से अधिक प्रयोग ही प्रदूषण कहलाता है। निष्कर्ष यह है कि हमें प्रकृति के साथ तादात्मय स्थापित करना चाहिए उसके स्वरूप को नष्ट न करके उसका समुचित संरक्षण करना चाहिए। वैदिक एवं सामाजिक ग्रंथों तथा साहित्य में प्रकृति के स्वरूप, पर्यावरण संरचना और उसके स्वरूप के संबंध में विस्तृत विधान मिलता है यदि मानव उक्त विधान का परिपालन करे और जो निषेधात्मक पक्ष है उनका उल्लंघन न करे तो मानव कल्याण और मानव हित के लिए उपयोगी होगा। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है पर्यावरण संरक्षण वायु, जल भूमि, आकाश, अन्न आदि पर्यावरण के सभी पदार्थों की शुद्धि के लिए वेद हमें जागरूक करते हैं तथा अस्वच्छता को दूर करने के लिए प्रेरित करते हैं। पर्यावरण की शुद्धि के लिए वनस्पति उगाना, अग्निहोत्र करना, अग्नि, सूर्य एवं खानों औषधियों का उपयोग करना आदि उपाय सुझाते हैं। निर्मला पुतुल के शब्दों में

आओ मिलकर बचाएं ,

कि इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है ,

अब भी हमारे पास।

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.423

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com